राजभवन सूचना परिसर, उत्तराखण्ड
प्रेस विज्ञप्ति–3

राजभवन देहरादून दिनांक 11.08.2017

टॉपर्स कानक्लेव के चौथे दिन द्वितीय सत्र में कुमाऊँ वि.वि के भूगर्भ विज्ञान के प्रो0 चारू पंत ने नैनीताल झील के ऐतिहासिक एवं भूगर्भिक संरचनाओं पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 1841 में एक ब्रिटिश नागरिक ने नैनी झील की खोज की थी। 1865 से लोगों ने निरन्तर यहां आना और रहना शुरू किया। वर्ष 1880 में नैनीताल झील में आए भूस्खलन से अत्याधिक जान–माल की हानि हुई थी जो एक संकेत था कि प्रकृति के अमूल धरोहरों से छेड़छाड करना विनाश को न्योता देने से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि नैनीताल झील 1.5 किलोमीटर की लम्बाई में फैली है जिसके चारों तरफ अत्यधिक निर्माण कार्यों से नैनीताल झील पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। यहां अत्यधिक भीड़–भाड़ का नतीजा यह है कि इस वर्ष इस झील का जलस्तर 6 से 7 मीटर कम देखा गया।

इसी सत्र में दूसरे वक्ता के रूप में कुमाऊँ वि.वि के कुलपति प्रो0 डी.के.नौडियाल ने पंचवर्षीय योजनाओं के लक्ष्यों की जानकारी दी तथा देश के विकास एवं आर्थिकी में उत्तराखण्ड की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड हिमालयी क्षेत्र का एक नवोदित राज्य है जिसका देश के विकास व आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। यहाँ के प्राकृतिक संसाधन, जल, जंगल एवं मानव संसाधन देश के हर क्षेत्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

.....0.....